TARGET with Alok

विद्यार्थी नहीं प्रशासक बनिए

An Online Institute for Civil Services

भारतीय इतिहास
(INDIAN HISTORY)

— By Satyam Tripathi

Call us :	Whatsapp
9721026382	9721026382
9717413295	9717413295
9170509670	9170509670
9170509671	9170509671
9670365889	9670365889
8736093317	8736093317
7860949547	7860949547
7388655387	7388655387
7880947856	7880947856
6389318812	6389318812
7081865829	7081865829
9918100665	9918100665

Director – Alok Singh

Email. targetwithalokias@gmail.com

वैदिक युग

(1500 BC - 600 BC)

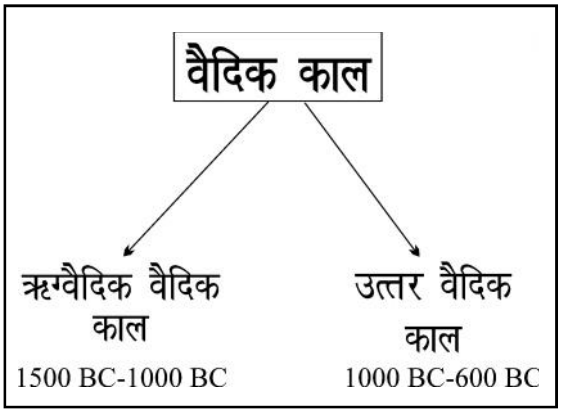

आर्य कहाँ से आये – आर्य का शाब्दिक अर्थ 'श्रेष्ठ'

आर्य समूह –समूह मे आये एक सफल समूह जो आर्यों का आया वह है (जन) 1500 BC के बाद जब ये लोग हिन्दुस्तान प्रवेश किये तो वह गाय चराने के सिलसिले में आये और ये चलते रहते थे। एक स्थान से दूसरे स्थान इतिहासकार मानते है। कि इनका मूल निवास स्थान दक्षिणी रूस के पास कहीं मध्य एशिया मे था। ये चलवासी थे। (चलवासी जीवन) ऐसे ही चलते-चलते ये 1500 BC के आसपास हिन्दुस्तान मे प्रवेश किये तो इनके पास तीन संस्थाएं थी।

हिन्दुस्तान में प्रवेश किया और स्थाई लोगों से संघर्ष हुआ।

(i) जन (ii) पुरोहित (iii) विद्य (iv) गण

आर्यो का मूल निवास स्थान के बारे में विद्वानों का मत

विद्वान	स्थान
प्रो. मैम्स मुलर	मध्य एशिया
दयानन्द सरस्वती	तिब्बत
बालगंगाधर तिलक	आर्कटिक प्रदेश
डॉ. अविनाश चन्द्रदास	सप्तसैंधव क्षेत्र
गंगा नाय झा	ब्रह्मर्षि देश (पूर्व देश) (गंगा, यमुना, सरस्वती)
लक्ष्मीधर कल्ल	कश्मीर
डी. एस विवेद	मूलताम (देविका)
हर्ट एण्ड पेनका	जर्मनी
जी. गाइल्स	हंगरी
ब्रैडेस्टाइन	दक्षिणी रूस
प्रो. नेहरिग और गार्डन चाइल्ड	दक्षिणी रूस

ऋग्वेद में वर्णित नदियां

नया नाम	पुराना नाम
झेलम	वितस्ता
चेनाव	अश्किनी
रावी	परूष्णी
व्यास	विपाषा
सतलुज	शतुद्रि

ऋग्वैदिक राजनीति

राजतंत्रात्मक प्रणाली अधिक लोकप्रिय थी। प्रशासनिक ढांचें निम्नलिखित थे-

जन - गोप्ता जनस्य राजा (पुरु, यदु, अनु, द्रुहा, तुर्वश, भरत) प्रमुख जन थे।

विश - विशपति

ग्राम - ग्रामिणी

कुल - कुलप

तीन प्रमुख प्रशासकीय संस्थाएं थी-

1. **विदय :** विशेषज्ञ लोगों का संगठन
2. **सभा :** बुजुर्गों का संगठन
3. **समिति :** सभी लोगों का संगठन, समिति के सभापति को ईशान कहा जाता था।

- ❖ विद्वानों का मत है की आर्य समूहों-समूहों मे भारत आये इन आर्य समूहों को जन की संज्ञा दी गयी हैं। ऋग्वेद मे जन शब्द का उल्लेख 275 बार आया है।
- ❖ प्रशासनिक अधिकारियों को निकाल देने के बाद बची सामान्य जनता को विश कहा जाता था।
- ❖ विश अनेक ग्रामों मे विभक्त था। जिसका प्रमुख ग्रामणी कहलाता था। ग्राम, कुलों, परिवारों में विभक्त था।
- ❖ कुल का मुखिया कुलप कहलाता था।
- ❖ सामान्यतः कुलप परिवार का बढ़ा पुरुष सदस्य होता था।
- ❖ जन की सभा एवं समिति नामक संस्थाएं राजन का चुनाव करती थी।
- ❖ राजा जन और गाय दोनों का रक्षक होता था।
- ❖ इसीलिए इसे जनपति और गौपति आदि नामों से भी सम्बोधित किया जाता था।
- ❖ सभा और समिति के अलावा गण और विदथ नामक प्राचीन संस्थाएं भी थी। विदथ और सभा में महिलाएं भी भाग ले सकती थी।
- ❖ राजा युद्ध का प्रधान होता था, न की भूमि का।
- ❖ सेना की ईकाइयाँ शर्ध और व्रात कहलाती थी, गुप्तचर स्पर्श नाम से जाने जाते थे।
- ❖ ब्राजपति चारागाह भूमि का प्रधान होता था।
- ❖ उग्र पुलिस जैसा कर्मचारी होता था।
- ❖ प्रश्नविनाक समस्या को हल करता था, अर्थात न्यायधीश जैसा था।

उत्तरवैदिक कालीन राजनिति :

- ❖ राजतंत्रात्मक प्रणाली थी।
- ❖ उत्तरवैदिक काल में जनों के आकार में वृद्धि हुई कई जन मिलकर जनपद बन गए जैसे - पुरू + भरत = कुरू।
- ❖ सभा समिति और विदथ जैसी संस्थाए अब अप्रसांगिक हो गयी और उनकी जगह पर नए प्रशासनिक समूह का जन्म हुआ जिसे रत्नी कहा गया।
- ❖ चारों दिशाओं के राजा को अलग-अलग नाम से जाना जाने लगा।

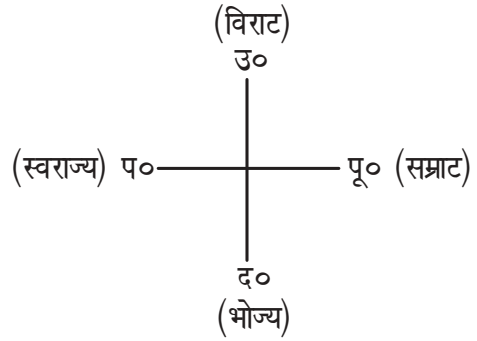

- ❍ चारों दिशाओं को जीने वाले राजा को एकराट कहते थे राज्य को जीतने वाला।
- ❍ ऋग्वैदिक काल में शासन करने वाले राजन अब प्रदेश के प्रमुख के रूप में राजा बन गये।
- ❍ उत्तरवैदिक कालीन अनेक राजा ब्रह्म ज्ञानी और आत्म चिंतक भी थे।

जैसे-

- ❖ विदेह के राजा - जनक
- ❖ कैकेय के राजा - अश्वपति
- ❖ पांचाल के राजा - प्रवाहण जायवलि
- ❖ कुरू के राजा - परिच्छित और जनभेज्य

सतपथ ब्राह्मण में कुरू (जनपद) और पंचाल (जनपद) को वैदिक संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि माना गया है। अथर्ववेद मे राजा परिच्छित को मृतलोक का देवता कहा गया है। इस काल में आते-आते राजा अधिक शक्तिशाली हो गये तथा सभा और समितियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया। सभा में महिलाओं की सदस्यता समाप्त कर दी गयी। सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां करार दिया गया। अथर्ववेद में सभा को नरिष्ण कहा गया है। ऐतरेय ब्राह्मण में राजा की दैविय उत्पत्ति के सिद्धांत को विकसित किया गया है। इस काल में भाग के नाम से कर व्यवस्था स्थापित हो गयी थी और भिन्न-भिन्न दिशाओं में राज्य

करने वाले राजाओं और उनके राज्यों के नाम पूर्णतः स्थापित हो गये थे। अथर्ववेद के सिद्धांतों के अनुसार राजा अपनी जनता से उपज का 1/16 भाग लेता था। राजा अपने रत्नीयों के सहयोग से शासन का संचालन करता था।

शतपथ ब्राह्मण में 12 रत्नीयों का उल्लेख है, प्रमुख रत्नी के नाम निम्नलिखित है-

सेनानी	-	सेनपाति
सूत	-	रथ सेना का नायक
ग्रामीण	-	ग्राम प्रमुख एवं सैनिक टुकड़ी का अध्यक्ष
संग्रहण	-	कोषा अध्यक्ष
भागदुध	-	अर्थमंत्री
स्थापति	-	सीमांत प्रदेश का प्रशासक
सतपति	-	100 ग्राम (गांव) के समूह का प्रधान

वैदिक कालीन समाज

स्त्रीयों की भागीदारी सिर्फ सभा में और विद्थ में थी। इसका मतलब समाज में स्त्रियों का स्थान पुरुषों से कम था। अर्थात् समाज पित्र-सत्तामक था। इस समाज की कामना थी, कि पुत्री जन्म को दुर्भाग्य मानते थे।

- ब्राह्मण अपनी वाणी से जीविता चलाता था।
- क्षत्रियों अपनी शस्त्र से सबकी रक्षा करता था।
- अन्य लोगों को उपहार देने वाला बलि देने वाला वैश्य था।
- जो गरीब था बुद्धिमान कम था, वह पिछड़ता चला गया।

ऋग्वैदिक समाज -

ऋग्वैदिक समाज पित्र सत्तामक था। परिवार समाज की ईकाई थी। ऋग्वैदिक काल में संयुक्त परिवार की प्रथा थी। परिवार की समपन्नता की मापदण्ड परिवार की वृहदता थी। ऋग्वेद के 10वें मण्डल में पुरुष सूक्त में चारों वर्णों की उत्पत्ति मानी जाती है। ये चार वर्ण थे।

(i) ब्राह्मण (ii) क्षत्रिय

(iii) वैश्य (iv) शूद्र

बाल विवाह नहीं होते थे। लेकिन अंतर्जातीय विवाह होते थे। आजीवन अविवाहित रहने वाली लड़की को अमाजू कहा जाता था। पर्दा प्रथा नहीं थी। समाज में नियोग प्रथा थी।

नियोग - अगर किसी स्त्री का पति न हो तो और उसका कोई सन्तान न हो तो वह अपने पति के छोटे भाई (देवर) के साथ विवाह कर सकती थी और सन्तान की प्राप्ति कर सकती थी। पुनर्विवाह होते थे। समाज में स्त्रीयों को राजनीति युद्ध इत्यादि में भाग लेने का अधिकार नही था।

Call us : 9721026382, 7860949547, 9717413295, 7388655387, 9170509670, 7880947856, 9170509671, 6389318812, 9670365889, 7081865829, 8736093317, 9918100665

Whatsapp us : 9721026382, 7860949547, 9717413295, 7388655387, 9170509670, 7880947856, 9170509671, 6389318812, 9670365889, 7081865829, 8736093317, 9918100665

Log in. **targetwithalok.in** for General Studies and Current Affairs Notes

विदुषी महिला – लोपा, विश्वारा, सिकता, अपाला जैसे विदुषी स्त्रीयों का नाम मिलता था। ऋग्वैदिक लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों होते थे। पेय पदार्थों में सोम रस प्रचलित था। गायों को 'अघन्या' अर्थात् 'न मारे जाने योग्य कहा गया है', लेकिन अतिथि को गोहन कहा गया है। जिसको कुछ विद्वान गोमांस खाने वाला कहा गया है। यौ प्रमुख खाद्यान्न था।

ऋग्वैदिक लोग वस्त्र– ज्यादातर सूत के बने वस्त्र पहने जाते थे। ऊन और मृगचर्म के बने वस्त्र को भी पहना जाता था।

वासस	–	निचला वस्त्र
अधिवासस	–	उपरी वस्त्र
निवि	–	अन्दरूनी वस्त्र
उष्णीज	–	पगड़ी (सर पर पहनने वाला)

मनोरंजन के लिए ये नृत्य, संगीत, इत्यादि का प्रयोग करते थे, धूत (जुआँ) भी खेला जाता था, लेकिन अच्छा नहीं माना जाता था।

उत्तरवैदिक सामाजिक स्थिति

उत्तरवैदिक काल में समाज जन्म के आधार पर चार वर्णों ये विभक्ति हो चुका था। प्रथम तीन वर्ण को द्विज कहा जाता था। इस समय तक आते-आते गोत्र प्रथा स्पष्ट हो चुकी थी। और गोत्र के बाहर ही विवाह को मान्य किया गया था।

ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों का उपनयन (जनेऊ) संस्कार होता था उत्तरवैदिक काल में उपनयन के अधिकार से वंचित कर दिया गया। स्त्रियों के विवाह की उम्र कम कर दी गयी। पुत्री जन्म निंदित हो गया। ऐतरेव ब्राह्मण में पुत्री जन्म को निंदित बताया गया है। इन सबके बावजूद उत्तरवैदिक समाज मे गार्गी, गंधर्व, गृहीता, मैत्रेयी, जैसी पुमुख स्त्रीयों थी। इस काल में अब नियोग प्रथा समाप्त हो गयी। विधवा विवाह बंद हो गया।

चार आश्रम व्यवस्था थी

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संयास

चार पुरुषार्थो को प्राप्त करना होता थाः

ये चार पुरुषार्थ में – (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)

जन्म से लेकर मृत्यु तक 16 संस्कार होता था 16 संस्कार में विवाह संस्कार गृहस्थ जीवन का आधार होता था समाज में चार मान्य विवाह तथा चार अमान्य विवाह थे–

मान्य विवाह –
- ❍ दैव विवाह - यज्ञ करने वाले पुरोहित को कन्या सौप दी जाती थी।
- ❍ ब्रह्म विवाह – सजातीय विवाह
- ❍ प्रजापत्य विवाह – कन्या को किसी योग्य वर को सौंप देना।
- ❍ आर्ष विवाह – कन्या का पिता को लड़का के पिता एक जोड़ी बैल देगा।

अमान्य विवाह –
- ❍ गंधर्व विवाह – प्रेम विवाह (Love Marrige)
- ❍ असुर विवाह – पिता अपने कन्या को पैसा लेकर बेच देता था।
- ❍ राक्षस विवाह – लड़की को जबरदस्ती लेजाकर विवाह कर लेना
- ❍ पैसाल विवाह – लड़की को कुछ खिला पिला (मूर्छित कर) कर विवाह करना।

अन्तर्जातीय विवाह भी प्रचलित था

अनुलोम विवाह : (i) वर – उच्च वर्ग का (ii) वधु – निम्न वर्ग का

प्रतिलोम विवाह : (i) वर – निम्न वर्ग का (ii) वधु – उच्च वर्ग का

❍ ब्राह्मण कन्या और सूद्र पुरुष से उत्पन्न संतान को चाडांल कहा जाता था। इसको मुख्य बस्ती में रहने की अनुमति नहीं था।

ऋग्वैदिक कालीन अर्थव्यवस्था

ऋग्वैदिक काल में पशुपालन वैदिक आर्यो का मुख्य पेशा और कृषि द्वितीयक पेशा था। यह निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट होता है अधिकांश लड़ाईयाँ पशुधन के लिए होती थी।

लड़ाई के लिए निम्न शब्द मिलते है- गत्य, ब्रुगलतु, गवेषणा

पाणि लोग आर्यों की गाय चोरी करते थे, क्योंकि गाय आर्यों की मुख्य सम्पत्ति होती थी। गाय के लिए अघन्या, शब्द बेटी के लिए दुहिता शब्द तथा सांयाकाल के लिए गोधूलि शब्द का प्रयोग होता था। ऋग्वैदिक कालीन में आर्यों का द्वितीयक पेशा कृषि था। क्योंकि यह सभी अनाजों के लिए धान्य या यौ शब्द ही प्रयोग करते थे। कृषि के लिए ऋग्वेद के मात्र चौथे मण्डल में ही कुछ शब्दों का उल्लेख हुआ है। इस काल में मात्र अयस्क (तांबे) की ही खोज हो पाई थी। शायद कृषि सीमित रहा होगा। क्योंकि तांबे से व्यापक पैमाने पर कृषि सम्भव नहीं है।

उत्तरवैदिक कालीन अर्थव्यवस्था :

उत्तरवैदिक काल में कृषि आर्यों का प्राथमिक पेशा बन चुका था। इसी काल में पृथुवैन्यु ने हल और कृषि का आविष्कार किया और (अथर्ववेद) सतपत ब्राह्मण में कृषि की क्रियाओं का उल्लेख है और कंठोनिषद में 24 बैलों द्वारा हल के जोते जाने का उल्लेख है। यजुर्वेद में निम्नलिखित अनाजों के नाम मिलते हैं:-

ब्रीहि - चावल

यव - जौ

माष - उड़द

मुदग् - मूंग

गोधूम - गेहूं आदि

इसी काल में दो प्रकार के अयश का उल्लेख होने लगा था

(i) कृषि अयस या श्याम अयस - लोहा

(ii) लोहित अयस - तांबा

कृषि के लिए प्रमुख शब्द

उर्वश	-	जुता हुआ खेत
लोगल	-	हल
करीष	-	गोबर की खाद
सीता	-	हल की नलियां
अवट	-	कुआं
कीनांश	-	हलवाहा
उर्दर	-	अनाज मापने का माप

इत्यादि शब्दों का उल्लेख हुआ है।

यह सभी शब्द इस बात की तरफ संकेत करते है कि कृषि एक व्यापक पेशा बन चुका था। उत्तरवैदिक काल के लोग सर्वाधिक मात्रा मे लालमृदभाण्डों का प्रयोग करते थे। लेकिन PGW (निवित घूसर मृदभाण्ड) इनकी पहचान थी।

सतपथ ब्राह्मण में :-

महाजनी प्रथा का उल्लेख मिलता है। (यजुर्वेद इस ग्रन्थ में सूदखोर को कुसीन = कुसीदिन कहा गया है।

तैतरीय संहिता में ऋण के लिए कुसीद शब्द का उल्लेख है।

यजुर्वेद में चांदी का भी उल्लेख हुआ है। इस काल मे वस्तु विनिमिय प्रणाली से वस्तुओं का लेन देन प्रारम्भ हो गया था। लेकिन कुछ समय बाद वस्तु विनिमय के लिए गाय एवं निष्क (गले में पहने जाने वाला) का प्रयोग किया जाने लगा।

i. इन्द्र की मूर्ति - 10 गाय

ii. मनुष्य का जीवन - 100 गाय

वैदिक कालीन धर्म

धर्म का शाब्दिक अर्थ 'धारण करने योग्य' जो एक दूसरे को फलने-फूलने का मौका दें। नियमो का संग्रह और कानून है।

ऋगवैदिक कालीन धर्म :-

1. आर्य का प्रमुख देवता इन्द्र है ऋग्वेद में 250 बार स्तुति की गयी है।
2. दूसरे स्थान पर अग्नी देवता थे, ऋग्वेद में 200 बार स्तुति की गयी है।
3. तीसरे स्थान पर वरूण देवता थे, जिन्हें असुर भी कहा गया है यह प्राकृति के नियमक थे और जलनिधि के प्रतिनिधि थे।
4. ऋग्वैदिक देवकुल में देवीयों की नगण्यता थी और पुरुष देवताओं की बहुल प्रधानता थी। इससे ऋग्वैदिक समाज का पुरुषवादी होना सुनिश्चित होता है।
5. सोम देव वनस्पति के देवता थे, ऋग्वेद का नवां मण्डल सोमदेव को समर्पित है।
6. मारूत वायुआंधी तूफान के देवता थे।
7. ऊषा सुबह की देवी थी।
8. पुषन पशुओं के देवता थे।
9. ऋग्वेद में रूद्र को त्रयवेक कहा गया है, ऋग्वैदिक काल में अधिक महत्व नहीं थी।
10. सोभ देवता हिमालय की यूर्जवंत की चोटी पर रहते थे। (वनस्पति देवता)

उत्तरवैदिक धर्म

ऋग्वैदिक काल में इंद्र सरल प्रमुख देवता थे क्योंकि इनके लिए ऋग्वेद के 250 सूत्रों में स्तुति हुई है। दूसरे नम्बर पर अग्नि देवता थे। जिनके लिए ऋग्वेद के 200 सूत्रों मे स्तुति हुई है। ऋग्वेद में अग्नि को मध्यस्थ तथा पृथीकृत कहा गया है। तीसरे महत्वपूर्ण देवता ये वरूण जिन्हें असुर भी कहा गया है। यह ऋतस्थगोथा अर्यता प्रकृति के नियामक थे और जलनिधि के प्रतिनिधि थे। ऋग्वैदिक देव कुल मे देवीयों की नगण्यता है और पुरुष देवताओं की प्रधानता बहुलता है। इससे ऋग्वैदिक समाज का पुरुषवादी होना सुचित होता है।

देवताओं का वर्गीकरण

यास्क ऋषि ने अपने निरूक्त में देवताओं की तीन श्रेणीय बताई हैं।

(i) आकाश - सूर्य, सविता

(ii) अंतरिक्ष के देवता - इन्द्र, पर्यन्य, भरूत

(iii) पृथ्वी - नदी, अग्नि, वृहस्पति

(iv) आकाश के देवता - यास्क ने आकाश के देवताओं की संख्या 11 बताई। इसमें उन्होंने सूर्य, सविता, धौस, वरूण, मित्र, पूषई, विष्णु, आदितय, ऊषा, अश्विन इत्यादि को रखा।

(v) अंतरिक्ष के देवता - उन्होंने इन्द्र, प्रर्जन्य, मरूत, रूई आदि को रखा। इनकी संख्या भी 11 ही बताई।

(vi) पृथ्वी के देवता - ये अग्नि नदी सोम, बृहस्पति, इत्यादि को रखा। (पृथ्वी, वनस्पति)

राजा को निम्नलिखित प्रकार का यज्ञ भी करने को मिलते थे।

..... – राज्य अभिषेक के दौरान

बाजपेय यज्ञ – रथ दौड़

अश्वमेध यज्ञ – इसके राजा अपने राज्य की सीमा निर्धारित करता था।

अग्निष्टोग यज्ञ – इस यज्ञ के दौरान यज्ञ करने वाले याज्ञिक को और उसकी पत्नि को 1 वर्ष तक स्वास्तिक जीवन बिताना होता था। इस यज्ञ के दौरान पशुबलि दी जाती थी और सोम का पान किया जाता था।

उत्तरवैदिक कालीन धर्म

उत्तरवैदिक काल मे प्रजापति का प्रमुख स्थान था। सर्वसंरक्षक विष्णु दूसरे स्थान पर और शिव तीसरे स्थान पर थे। इस काल मे इंद्र वर्षा के देवता हो गये और पुषन सूदों का देवता यही वह काल है। जब मूर्ति पूजा का आमास दिखने लगता है। पहली बार इसी काल में सतपथ ब्राह्मण मे पुनर्जन्म का उल्लेख प्राप्त होता है। इशोपनिषद मे कार्य के सिद्धान्तों की चर्चा है।

उत्तरवैदिक काल में आते-आते षड्दर्शनों का उल्लेख मिलने लगता है। निम्नलिखित है-

नाम		**प्रवर्तक**
सांख्यदर्शन (सर्वप्राचीन)	–	कपिल
योगदर्शन	–	पतंजलि
न्यायदर्शन	–	गौतम
वैशेषिक दर्शन	–	कणाद
पूर्व मिमांसा	–	जैमिनी
उत्तर मिमांसा	–	वेदान्त दर्शन (वादरायण)

Note : छान्दोय के उपनिषद में इतिहास पुराण को स्पष्ट रूप से वेद कहा गया है।

अर्थवेद का पृथ्वी वैदिक राष्ट्रीय गीत है। जिसमें आर्य भूमि के प्रति अपनी सुदृढ़ शक्ति का प्रदर्शन है। वैदिक गृहस्थों के द्वारा 5 महायज्ञों को करने का विधान था।

देव यज्ञ – यह देवताओं के प्रति कृतज्ञयता ज्ञापित करने के लिए इस यज्ञ को किया जाता था।

पितृ यज्ञ – यह देवताओं के प्रति कृतज्ञयता ज्ञापित करने के लिए इस यज्ञ को किया जाता था।

मनुष्य यज्ञ – अतिथियों के सत्कार के लिए ये यज्ञ का विधान था।

भूत यज्ञ – यह सृष्टि के प्रति जीवों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए किया जाने वाला यज्ञ था।

ब्रह्म यज्ञ या ऋषि यज्ञ – यह प्राचीन ऋषियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए किया जाता था।